आगतम्, स्वागतम्, सुस्वागतम्,

आए हुए सब मेहमानों का मै साधना मरलेचा "आदित्य होमिओपॅथीक हॉस्पिटल" कि ओर से सहर्ष स्वागत करती हुँ ।

आज जिनकी वजह से मै आपके सामने खडी हूँ ऐसे हमारे सर, हमारे डॉक्टर, हमारे भगवान 'अमरसिंह' नाम में ही बहुत कुछ आता है । जिनमें मैने भगवान को देखा ऐसी यह हस्ती को चरण स्पर्श करन के पश्चात आप लोगोंका जादा समय नहीं लेते हुए चार लाईन कहुँगी -

जिस माँ की कोख से जनम लिया वह माता धन्य है,

भगवान ने इस भगवान को भेजा मनुष्य के रूप में तो हम धन्य है,

कहते है होमिओपॅथी में दवा परफेक्ट होनी चाहिए, नहीं तो कुछ भी हो सकता है,

लेकीन हमारे सर के मुखसे निकली दवा और दुआ निशाने पे लगती है,

एक बार अगर गोली लगी, तो वह नस नस में घुमती है,

एक बार अगर गोली लगी, तो वह नस नस में घुमती है,

तबीयत कम ज्यादा, तबीयत कम ज्यादा

ऊपर निचें, ऊपर निचें करते करते

बिमारी जड से निकलती है ।

धन्यवाद !!

अब आए हुए मेहमानोंका एक छोटेसे गीत से स्वागत करती हुँ और उसमेंही हमारे हॉस्पिटल की छोटीसी कहानी सुनाती हुँ –

आओ, पधारो मेहमान, स्वागत का उठालों बहुमान

आए दूर दूर से आप, गलतियाँ हमारी कर देना माफ

बडी बडी हस्तियाँ आज, हम सब पेशंट के साथ

हमारे हॉस्पिटल की, कहानी सुनिए आप ।।1।।

यहाँ न इंजेक्शन है, ना सलाईन है

ना गंदी दवाईयाँ है, न साईड इफेक्ट्स है

मीठी मीठी गोलियाँ खाना है, आराम से सो जाना है ।।2।।

घर द्वार छोडके हम, यहाँ चले आते है

इस भगवान स हम, अच्छी दुआ माँगते है

रोत हुए आते है, हँसी हँसी चले जाते है ।।3।।

ऐसा मौका आया है, मैने तकदिर से पाया है,

होमिओपॅथी के पौधे को, पेड हमें बनाना है

इस पेड की छाँव में रहना है, रोग जड से मिटाना है ।।4।।